



## झूठ का पर्दा

**Author:** Asha Nehemiah

**Illustrator:** Aindri Chakraborty

**Translator:** Puja Omveer Rawat



जैसे ही उनके पिताजी काम पर निकले, रमेश ने कांच के गिलास के टूटे हुए टुकड़ों को झाड़ू से समेटा और वल्ली ने चाय बनायी।





हालांकि वो केवल आठ साल की है पर उसने अभी से अपनी माँ की पसंदीदा चाय बनाना सीख लिया है, कड़क और मीठी चाय उसकी माँ की पसंद। चाय पीते हुए बीच - बीच में माँ गरम गिलास को अपने माथे पर लगाती है। और अपने सूजे हुए गाल पर भी।

*मैं गिर पड़ी। मेरा पाँव फिसल गया। मेरे हाथ से गिलास गिरकर टूट गया।*

ये अम्मा के रोज़ के बहाने थे। इन सभी बहानों के पीछे की सच्चाई कोई नहीं जानता था। शायद किसी ने देखने की कोशिश भी नहीं की। अम्मा के बहाने बच्चों के मुँह पर भी आ गए, तब भी किसी को अंदाजा नहीं हुआ।





“अरे, तीन दिन से तुम रोज़ ब्रेड ले रही हो?”, पड़ोस की दुकान के मुरुगन ने पूछा।

उस सुबह उसकी दुकान पर ज़्यादा ग्राहक नहीं थे। वल्ली द्वारा खरीदी गयी चीज़ों को बही-खाते खाते में लिखते हुए वो उससे बातें करने लगा। “अगर तुम्हारी अम्मा की तबियत अभी भी इतनी खराब है कि वो खाना नहीं बना पा रही हैं, तो क्या तुम्हें उन्हें डॉक्टर को नहीं दिखा देना चाहिए?”

“ये उस तरह की बीमारी नहीं है, मुरुगन अन्ना,” वल्ली ने आह भरते हुए कहा। “तो फिर ये किस तरह की बीमारी है?” मुरुगन ने थोड़ा ज़ोर देकर पूछा।

“बस उनकी बाजू में बहुत दर्द हो रहा है क्योंकि वो सड़क पर फिसल गयी थी और सीधे कंधे के बल गिरी”, वल्ली ने अपनी माँ के झूठ को दोहराया।

पर उसकी आँखें कुछ और ही कह रहीं थीं।

हालांकि वल्ली उससे आँखें चुरा रही थी, मुरुगन को बहुत अजीब सा लगा। कुछ तो गड़बड़ थी। उसी शाम मुरुगन ने अपनी पत्नी सरसा से इस बात की चर्चा की और वल्ली की माँ, मीनाक्षी की सच्चाई सुनकर वो भौचक्का रह गया।



“ये गिरने और फिसलने से नहीं हुआ। इसकी वजह है उसका राक्षसनुमा पति। चेहरे से तो बड़ा भोला दिखता है। ऐसा जिसने कभी चींटी भी ना मारी हो! पर ये सब सिर्फ एक दिखावा है - बेचारी मीनाक्षी - वो अपने बच्चों की खातिर सारी मार-पिट्टाई सहती है।”

ये सुनकर मुरुगन बहुत परेशान हो गया। “मुझे ये नहीं पता था। तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? हमें कुछ करना चाहिए था।

आखिर हम दोनों परिवार एक ही गली में कितने सालों से रहते आये हैं। मीनाक्षी और उसके बच्चों का इस प्रकार सब कुछ सहना बिलकुल भी सही नहीं है।

“क्या मतलब? तुमने कभी भी ध्यान नहीं दिया?” सरसा हैरान थी। “मीनाक्षी की चोटें? पिछले हफ्ते उसका कटा हुआ होंठ। ये सब देखकर मेरा दिल बैठ सा जाता है।” उसने ठंडी सांस ली। “पर हम कर भी क्या सकते हैं? दखलंदाज़ी करने कहीं से चीज़ें और बिगड़ ना जाएँ।”

मुरुगन सोच में पड़ गया। कैसे वो उनकी मदद करे बिना उनकी परेशानी बढ़ाए। ऐसा कुछ कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। बहुत सोच - विचार के बाद मुरुगन के दिमाग में एक योजना आयी।

मुरुगन ने जिस मदद का इंतज़ाम किया था वो वल्ली के द्वार पर कुछ दिनों बाद आ पहुँची। उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान थी और उसने खाकी रंग की पुलिस की वर्दी पहनी हुई थी।





“मैं सब-इंस्पेक्टर, जया हूँ।,” उस युवा पुलिस अधिकारी ने अपना परिचय दिया। “मेरे मामा मुरुगन जी ने मुझे आपसे मिलने के लिए कहा था। आज मेरी छुट्टी जल्दी हो गयी तो सोचा घर जाते हुए आपसे मिलती चलूँ।”





वल्ली और उसके परिवार की आज किस्मत अच्छी थी। उनके पिता अपने काम के सिलसिले में शहर के बाहर गए हुए थे। जब उनके पिता घर होते तो उन तीनों पर हमेशा एक डर का साया मंडराता था। कहीं वो कुछ ऐसा ना कर दें जिससे उनके पिता का गुस्सा भड़क जाए।

“अप्पा को गुस्सा मत दिलाना!”,  
मीनाक्षी रोज़ अपने बच्चों से विनती करती थी।

“गाओ मत रमेश।”

“वल्ली! गेंद को मत उछालो।”

सब-इंस्पेक्टर जया, बच्चों द्वारा कही गयी सारी बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी। फिर बच्चे अपना गृहकार्य करने बैठ गए और वो अम्मा से धीमी आवाज़ में काफी देर तक बात करती रही।

जब जाने का समय हुआ तो जया ने काफी ज़ोर दिया कि वो उनका मोबाइल नंबर लिख लें। “आप मुझे कभी भी फ़ोन कर सकते हैं। दिन हो या रात। अगर मैं खुद नहीं आ पायी तो एक पुलिस वाले को मिनटों के अंदर आपके दरवाज़े पर भिजवा दूँगी,” उन्होंने वायदा किया।

“पर मेरे पास फ़ोन नहीं है,” अम्मा बोली। “मेरे पति मुझे फ़ोन नहीं रखने देते।”







जया ने फिर भी अम्मा को अपना नंबर लिखवा दिया।

इस भयानक स्थिति की ज़िम्मेदार तुम बिलकुल नहीं हो," बाइक पर बैठते हुए उन्होंने कहा। "ये हिंसा बिलकुल भी ठीक नहीं है। तुम तीनों को इसे साधारण बात समझ कर बिलकुल भी चुप नहीं रहना चाहिए। मीनाक्षी! जो बातें हमने आज की हैं तुम उनके बारे में ध्यान से सोचना और मेरे द्वारा दिए गए सुझावों पर ज़रूर अमल करना।"



उनके जाने के बाद वल्ली ने अम्मा से जया द्वारा कही गयी बातों का मतलब पूछा।

“सब-इंस्पेक्टर चाहती हैं कि मैं अपने परिवार जनों में से किसी को ये बताऊँ कि हमारे साथ क्या हो रहा है। उनका कहना है कि हमें अपनी परेशानियों को यूँ छुपाना नहीं चाहिए। हमें अपनी परेशानी उन लोगों से बाँटनी चाहिए जो हमारी परवाह करते हैं। उन्होंने ये भी कहा कि अगर मैं चाहूँ तो पुलिस स्टेशन में शिकायत भी दर्ज कर सकती हूँ। पर मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। क्या ये सब करने से हमें फायदा होगा?”





रमेश ने उदासी से सिर हिलाया। वो आजकल काफी चिड़चिड़ा हो गया था, और सभी पर शक करने लगा था। और तो और वो जब भी अम्मा की मदद करने उनकी तरफ दौड़ता तो वो बेचारा भी अप्पा के गुस्से का शिकार हो जाता।

“सब-इंस्पेक्टर ने अपना असली नंबर तो वैसे भी नहीं दिया होगा। ज़रा नंबर तो लगाओ उसने अपनी बहन और माँ को चुनौती दी। “मैं एक पूरी चॉकलेट की शर्त लगा सकता हूँ। या तो रिकार्ड की हुई आवाज़ सुनायी देगी या फिर कोई फ़ोन नहीं उठाएगा।”

“तो फिर सबसे पहले किसी को चिट्ठी लिखते हैं। क्यों ना पाटी को लिखें?” वल्ली को पता था की उसके अप्पा अपनी माँ से थोड़ा डरते हैं।



कुछ दिन तो लगे पर अम्मा ने आखिरकार पाटी को चिट्ठी लिख ही डाली। फिर वे सभी जवाब का बेसब्री से इंतज़ार करने लगे।

पाटी उनसे मिलने आएंगी तो कितना अच्छा होगा। वो उनके साथ थोड़ी सख्त ज़रूर थीं पर वो जब भी आती थीं, रमेश और वल्ली खूब मज़े करते थे। वो अपने साथ ढेर सारे घर के बने पकवान लाती थीं।





वो रोज़ वल्ली के बालों को नयी तरह से गूँथती थी और छोटी सी गली में उनके साथ क्रिकेट खेलती थी। अम्मा भी कभी - कभी साथ खेलती थी। पाटी और रमेश दोनों मिलकर गाने गाते थे, और हालांकि अप्पा को काफी चिढ़ मचती थी पर फिर भी पाटी के सामने वो अपना गुस्सा पी जाते थे।

हाँ, उनकी दादी अप्पा को कहती थीं कि उनकी हिंसा बिलकुल भी ठीक नहीं है।

पर जब दो हफ्ते गुज़र गए और पाटी की तरफ से कोई जवाब नहीं आया तो तीनों मायूस हो गए। अब उनका अगला कदम क्या होगा? तीनों उदासी भरी सोच में पड़ गए।

अप्पा एक हफ्ते से दौरे पर थे। और जब वो वापस आये तो अपने साथ एक खबर लाये।

“मेरी माँ ने मुझे कुछ दिन पहले फ़ोन किया था,” उन्होंने रूखे स्वर में कहा, “वो कल यहाँ आ रही हैं और कुछ महीनों तक हमारे साथ ही रहेंगी। कुछ महीने! समझ में नहीं आ रहा क्यों? यहाँ...!” उन्होंने रसोई घर के स्लैब पर कुछ पैसे फेंके।

“दुकान का पूरा उधार चुका देना और नया सामान लेते हुए माँ की पसंद वाली कॉफ़ी लेना मत भूलना।”

जैसे ही वो गुस्से में अपने पीछे ज़ोर से दरवाज़ा मारते हुए बाहर निकले, बच्चे खुशी के मारे कूदने लगे।

“अम्मा, हमें भी थोड़े पैसे दे दो न! टाफी के लिए,” रमेश ने ज़िद की। अम्मा मान गयी। पैसों के साथ - साथ अम्मा ने उन्हें आधी - अधूरी मुस्कराहट भी दी।









स्कूल जाते हुए वल्ली ने रमेश को मुरुगन की दुकान पर रुकने के लिए कहा। सब-इंस्पेक्टर जया की मुलाकात के बाद मुरुगन, जब भी संभव हो, दोनों बच्चों से ज़रूर बात करता था। जब वल्ली और रमेश उसकी दुकान में आये मुरुगन व्यस्त था। वल्ली, रमेश को वहाँ ले गयी जहाँ टाफियाँ, चॉकलेट रखी हुई थीं।



“देखो! सारे पैसे इधर - उधर की चीज़ों में खर्च करने से पहले, मुझे मेरी चॉकलेट दिला दो,” वल्ली बोली “क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि शर्त तो मैं ही जीतूंगी।”

रमेश को एक मिनट लगा शर्त याद करने में। उसने ये शर्त तब लगाई थी जब सब-इंस्पेक्टर जया उनके घर उनसे मिलने आयी थी। उसने हँसते हुए अपनी बहन को जल्दी करने को कहा। वल्ली ने अपनी पसंद की चीज़ चुन ली और फिर मुरुगन से अनुमति लेकर उसके फ़ोन से जया का नंबर मिलाया।

“हाँ, मुरुगन मामा!” दूसरी तरफ से एक जानी पहचानी आवाज़ आयी।



वल्ली ने रमेश को अंगूठा दिखाया। रमेश तो सोचता था कि पुलिसवाली उनके फ़ोन का जवाब नहीं देगी।







“जया अक्का, मैं हूँ। वल्ली।”

“क्या सब कुछ ठीक है, वल्ली? तुम्हें मदद चाहिए?” जया के शब्दों में चिंता थी।

“हम ठीक हैं, अक्का। मैं बस आपको ये बताना चाहती थी पाटी आ रही हैं। अब वो कुछ महीनों तक हमारे साथ ही रहेंगी। क्योंकि अम्मा ने उन्हें घर की बुरी स्थिति और अप्पा के बारे में लिखा था।

“वाह! ये तो बहुत अच्छी खबर सुनाई तुमने और अब तो तुम्हें ये भी मालूम है कि मुझ तक पहुँचना कैसे है, है न? तुम मुझे किसी भी वक़्त मदद के लिए फ़ोन कर सकते हो।”



फ़ोन पर बात करने और मुरुगन के कई सवालों का जवाब देने के बाद, बच्चे उसकी दुकान से अपनी चॉकलेट खोलते हुए निकल गए।

वल्ली काफी हल्का महसूस कर रही थी। सिर्फ इस वजह से नहीं कि वो एक ही चॉकलेट बांटकर खा रहे थे।





ना ही शर्त में जीती हुई एक पूरी चॉकलेट की वजह से बल्कि इसलिए, कि इतने महीनों में उसने पहली बार रमेश को धीमे धीमे गुनगुनाते हुए सुना।



## बच्चे घर में होने वाली घरेलू हिंसा का सामना कैसे करें?

जो बच्चे एक अत्याचार करने वाले और मारने - पीटने वाले माता-पिता के साथ रहते हैं वो ज़्यादातर डर, चिड़चिड़ापन या फिर शर्मिंदगी महसूस करते हैं। ये स्वाभाविक है। अगर आप किसी ऐसे बच्चे को जानते हैं जो इस स्थिति से गुज़र रहा है तो उसे ये ज़रूर बताएं :

**किसी को भी चुप रहकर हिंसा बर्दाश्त नहीं करनी चाहिए।**

सभी बच्चों और बड़ों को सुरक्षित रहने का अधिकार है, खासकर अपने घरों में।



**हिंसा कभी भी बच्चे की गलती से नहीं होती।** बच्चों द्वारा किया गया कोई भी कार्य अथवा व्यवहार हिंसा को अंजाम नहीं देता।



**घरेलू हिंसा एक संगीन अपराध है।** जुर्म की सूचना और रिपोर्ट पुलिस में होने के बाद भारत का कानून ऐसे बच्चों और महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करता है। अगर व्यक्ति दोषी पाया जाता है उसको इस की सज़ा भी मिलती है।





जब पीड़ित बच्चे खुद हिंसा की रिपोर्ट दर्ज नहीं करा सकते तो उनके दोस्त या सहपाठी भी उनकी इस प्रकार मदद कर सकते हैं:

**वो पीड़ित बच्चों को अपनी परेशानी बांटने का सुझाव दें।** दोस्त एवं सहपाठी तब तक इस बारे में पूछते रहें जब तक वो अपना दर्द किसी से सांझा न कर ले। बच्चे अपनी परेशानी विश्वसनीय लोगों से बाटें जैसे दादा-दादी, नाना-नानी, मामा, मौसी, पड़ोसी, प्रधानाचार्य।

**अपने माता - पिता से इस बात का जिक्र करें** और उनसे मदद मांगें।

**ज़रूरत पड़ने पर पीड़ित बच्चों की तरफ से मदद के लिए इस नंबर पर कॉल करें - १०९८ (1098)**

ये बच्चों की हेल्पलाइन है जिसको बच्चे और व्यसक किसी भी समय भारत के किसी भी क्षेत्र से मिला सकते हैं। ये सेवा ऐसे बच्चों को तत्काल मदद प्रदान करती है जो बाल शोषण, अभिभावकों की घरेलु हिंसा, दुर्व्यवहार, बच्चों से जुड़े किसी भी प्रकार के जुर्म से पीड़ित हो और सहायता चाहते हों।

### Story Attribution:

This story: झूठ का पर्दा is translated by [Puja Omveer Rawat](#) . The © for this translation lies with Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: '[Behind the Lie](#)', by [Asha Nehemiah](#) . © Pratham Books , 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

### Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver by Pratham Books. The development of this book has been supported by Oracle. Art Director: Kaveri Gopalakrishnan. We're grateful to Gopika Bashi - who works to prevent violence against women and children - for her inputs on the complex issue of domestic violence. [www.prathambooks.org](http://www.prathambooks.org)

### Images Attributions:

Cover page: [Siblings](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: [A boy sweeping the floor](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: [A woman and a girl sitting at a table](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: [A man and a girl in a shop](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: [A woman and girl sitting at a table](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: [Policewoman entering a house](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: [Woman telling children to be quiet](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: [A cup of tea](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: [Two women talking](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: [Mother and children on a sofa](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: [https://www.storyweaver.org.in/terms\\_and\\_conditions](https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions)



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

ORACLE®

The development of this book has been supported by Oracle.



### Images Attributions:

Page 13: [A boy feeling anger](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: [Old lady feeding a girl](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: [Women braiding a girl's hair](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: [A mother and her children in the kitchen](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: [A girl and a boy at a sweet shop](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: [Cell phone](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: [Girl talking on the phone](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: [A girl and a woman talking on the phone](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: [A boy and a girl eating chocolate](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: [Brother and sister walking home after school](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: [Drawing made by a child](#), by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 25: [A drawing made by a child](#) by [Aindri Chakraborty](#) © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: [https://www.storyweaver.org.in/terms\\_and\\_conditions](https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions)



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>



The development of this book has been supported by Oracle.

# झूठ का पर्दा

(Hindi)

वल्ली और रमेश, अपने पिता के कारण हमेशा से एक डर के साये में जीते आ रहे हैं। उनके पिता का गुस्सा बहुत खतरनाक है। क्या उनकी ज़िन्दगी कभी बदल पाएगी? घरेलू हिंसा, आशा और धैर्य की एक कहानी।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.



Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!